भगत कबीर – सबद ३०

जो जन लेहि खसम का नाउ ॥

रागु गउड़ी, भगत कबीर, गुरु ग्रंथ साहिब, ३२८

जो जन लेहि खसम का नाउ ॥
तिन कै सद बलिहारै जाउ ॥१॥
सो निरमलु निरमल हरि गुन गावै ॥
सो भाई मेरै मनि भावै ॥१॥ रहाउ ॥
जिह घट रामु रहिआ भरपूरि ॥
तिन की पग पंकज हम धूरि ॥२॥
जाति जुलाहा मति का धीरु ॥
सहजि सहजि गुण रमै कबीरु ॥३॥२६॥

सार: ज्ञान तभी सार्थक होता है जब उसे जीवन में उतारा जाए, न कि तब जब उसे व्यक्त करने वाले व्यक्ति की केवल प्रशंसा या पूजा की जाए। व्यक्तित्व के बजाय गुणों पर ध्यान देने से, प्रशंसा केवल निष्क्रिय श्रद्धा के बजाय आंतरिक विकास का मार्ग बन जाती है। दूसरों में दिखने वाले साहस, करुणा, ईमानदारी और स्पष्टता को हम अपने भीतर भी जगा सकते हैं। किसी को आदर्श मानकर पूजने से ज्ञान दूर रहता है जबकि उसे जीवन में उतारने से वह हमारी पसंद, व्यवहार और चरित्र का हिस्सा बन जाता है। इसलिए, सबसे गहरा सम्मान किसी व्यक्ति को इतना ऊँचा दर्जा देना नहीं है कि वह पहुँच से बाहर हो जाए बल्कि उन जागृत गुणों को अपने भीतर विकसित करना है जिनका वह प्रतिनिधित्व करते हैं।

जो जन लेहि खसम का नाउ ॥

जो लोग उस प्रिय और जीवन-आधारित सच्चाई के सार को अपने जीवन में उतारते और प्रकट करते हैं। यह किसी पवित्र शब्द को बार-बार दोहराना नहीं है बल्कि अपने सबसे गहरे स्वभाव को निरंतर याद रखना और उसे जीना है।

तिन कै सद बलिहारै जाउ ॥१॥
ऐसे लोगों के प्रति मैं सदा सम्मान और श्रद्धा रखता हूँ। इस सम्मान का अर्थ है केवल व्यक्तियों को आदर्श मानने के बजाय उनके ज्ञान को अपने जीवन में उतारना जिससे हम भी उन्हीं गुणों को विकसित कर सकें (१)

सो निरमलु निरमल हरि गुन गावै ॥
वही सचमुच पवित्र हैं जो उस सर्वव्यापी सत्ता के गुणों के साथ एकरूपता अनुभव करते हैं। इससे पता चलता है कि विचारों की पवित्रता उन लोगों में आती है जो ब्रह्मांड के नियमों के अनुसार चलते हैं।

सो भाई मेरै मनि भावै ॥१॥ रहाउ ॥
ऐसा साथी मेरे मन को बहुत भाता है क्योंकि उनकी उपस्थिति में आंतरिक स्थिरता और शांति का अनुभव होता है। यह आत्मीयता और आध्यात्मिक जुड़ाव को दर्शाता है जो उस सर्वव्यापी सत्ता की सच्चाई के साथ एक जैसी अनुभूति साँझा करने से पैदा होता है। (१)(विराम)

जिह घट रामु रहिआ भरपूरि ॥
उनका अंतर्मन पूर्णतः उस सर्वव्यापी सत्य में डूबा हुआ है। यह उस चेतना का वर्णन करता है जो सृष्टि के साथ अपनी मूल एकता को पहचान चुकी है।

तिन की पग पंकज हम धूरि ॥२॥
मैं ऐसे जागृत लोगों के चरणों की धूल के समान स्वयं को विनम्र मानता हूँ। यह ज्ञान के प्रति सम्मान और विनम्रता को दर्शाता है, जो लोग इसे अपनाते हैं वह सर्वोच्च सम्मान के पात्र हैं। (२)

जाति जुलाहा मति का धीरु ॥

जाति से जुलाहा हैं लेकिन समझ में अडिग और स्थिर हैं। इससे पता चलता है कि वास्तविक मूल्य और क़द, जन्म, धार्मिक मान्यताओं या सामाजिक पहचान पर नहीं बल्कि आध्यात्मिक परिपक्वता पर निर्भर करता है।

सहजि सहजि गुण रमै कबीरु ॥३॥२६॥

पूरी सहजता और संतुलन के साथ, कबीर कहते हैं कि उन्होंने इन गुणों को आत्मसात कर लिया है। यह सहज अवस्था को दर्शाता है जिसमें प्रकृति के सार्वभौमिक नियमों के साथ सामंजस्य बिना किसी प्रयास के बन जाता है। (३)(२६)

तत्त्व: भगत कबीर बताते हैं कि सच्चा रिश्ता ख़ून, विश्वास या पहचान से नहीं बल्कि सर्वव्यापी सत्ता के सत्य के साथ एक सांझा जुड़ाव से बनता है। यह जागृत चेतना से उपजा बंधन है जिसमें लोग एक-दूसरे में उसी गहन सच्चाई को पहचानते हैं जो अलग-अलग जीवन के माध्यम से प्रकट होती है। ऐसा साथ बाहरी मतभेदों से ऊपर होता है क्योंकि यह सत्य, करुणा और आंतरिक स्वतंत्रता के प्रति समान झुकाव पर आधारित होता है। यह सांझा जुड़ाव विश्वास, विनम्रता और अपनापन बढ़ाता है।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com